Date __/__/____ B.A III SEM

Education

Paper Title

शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य.

Unit-1

शिक्षा और दर्शन

Section A

Short Answer Type Questions.

Q.1 शिक्षा का अर्थ बताइए।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ है- 'सीखना, सिखाना या प्रारंभ करना'। इस प्रकार शिक्षा का अर्थ है उस प्रक्रिया से जो सीखने और सिखाने के द्वारा संपन्न की जाती है।

अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के लिये 'एजुकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Educatum' शब्द से हुयी है जिसका अर्थ है शिक्षित करना। Educatum शब्द दो

Date __/__/__

शब्दों के योग E तथा Duko से बना है। जिसमें E का अर्थ है - 'अन्दर से' और Duko का अर्थ है 'आगे बढ़ाना'। इसके अतिरिक्त शिक्षा शब्द के लिये अंग्रेजी के दो अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है 'एजुकेमर' जिसका अर्थ है शिक्षित करना तथा Educare जिसका अर्थ है विकसित करना। शिक्षा के लिये अन्य शब्द 'विद्या' का भी प्रयोग किया जाता है। विद्या शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'विद' धातु से हुयी है जिसका अर्थ है जानना या ज्ञान की प्राप्ति करना।

इस प्रकार शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अन्दर निहित जन्म जात शक्तियों को बाहर निकालने में सहायक होती है।

## Q.2 शिक्षा का संकुचित अर्थ

संकुचित अर्थ में शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो बालक को विद्यालय में शिक्षक के द्वारा पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रदान की जाती है। यह शिक्षा बालक विद्यालय में रह कर प्राप्त करता है, और इसका एक निश्चित समय होता है। इस शिक्षा का पाठ्यक्रम पहले से निर्धारित होता है। शिक्षकों के द्वारा निश्चित शिक्षण विधियों का प्रयोग करके बालकों को पढ़ाया जाता है तथा इसमें शिक्षक का स्थान प्रमुख होता है। आजकल अधिकांश शिक्षा को इसी अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।

Page No.

Date __/__/____

जे. एस. मैकेंजी के अनुसार "संकुचित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय, हमारी शक्तियों के विकास और उन्नति के लिये चेतना पूर्व किये गए प्रयास से लिया जाता है।"

इस प्रकार संकुचित अर्थ में शिक्षा विद्यालय परिधि तक चलने वाली वह प्रक्रिया है जो एक निश्चित समय से प्रारम्भ हो कर एक निश्चित समय पर समाप्त हो जाती है। यह मनुष्य को विधिवत ज्ञान और अनुभव प्रदान करती है और उसे जीविका के लिये मार्ग भी प्रदर्शित करती है।

---

Q-3 शिक्षा का व्यापक अर्थ

---

व्यापक अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो बालक विद्यालय, परिवार और अपने आस-पास से प्राप्त करता है। वास्तव में व्यक्ति जन्म से ले कर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। शिक्षा मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है इस शिक्षा में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी अनुभव सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार की शिक्षा अत्यंत व्यापक होती है यह बालक को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करती है और उसमें अपने वातावरण के साथ समायोजन

Date / / 

की क्षमता पैदा करती है।

प्रो. डीम्बल के अनुसार- "शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव आते हैं जो मानव को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।"

जॉन डी.वी. के अनुसार- "शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है जिसमें वह अपनी सर्वोत्तम शक्तियों द्वारा मानव जीवन में

---

Q.4 दर्शन का अर्थ तथा परिभाषा बताइए।

Ans. दर्शन शब्द अत्यंत गूढ़ और गहन है। मानव जीवन से जुड़े अनेक ऐसे प्रश्न है जैसे मानव का वास्तविक स्वरूप क्या है? इस सृष्टि की रचना किसने की? क्या ईश्वर का अस्तित्व है? पुण्य क्या है? दुःख क्या है? जीवन क्या है? मृत्यु क्या है आदि जिनके उत्तर जानने को मानव में सदैव उत्सुकता बनी रहती है और वह उनके बारे में जानना चाहता है। इन प्रश्नों के उत्तर जिसमें मिलते है उसे दर्शनशास्त्र कहते हैं। कौटिल्य के शब्दों में- "दर्शनशास्त्र सभी विद्याओं का दीपक है वह सभी कर्मों को सिद्ध करने का साधन है, वह सभी धर्मों का अधिष्ठान है।"

दर्शन शब्द 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना'। इसके अतिरिक्त दर्शन शब्द अंग्रेजी भाषा के फिलोसफी शब्द का पर्याय है। यह

Page No.

Date __/__/__

दो शब्दों से मिल कर बना है फिलोस और सोफिया। फिलोस का अर्थ है प्रेम या अनुराग और सोफिया का अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार फिलोसफी शब्द का अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम अतः दर्शन ज्ञान की वह शाखा है जो सत्य और ज्ञान के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डालता है। डॉ राधाकृष्णन के अनुसार- "दर्शन सत्य के तार्किक स्वरूप की विवेचना है।"

रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में "सत्यम, शिवम् एवं अद्वैतम का समन्वय ही दर्शन है।"

दर्शन शास्त्र में अन्तिम सत्य की खोज के रूप में ब्रह्माण्ड, ईश्वर- सृष्टी आत्मा, परमात्मा जीवजगत, ज्ञान, अज्ञान और ज्ञान प्राप्त करने के साधन आदि का अध्ययन किया जाता है।

---

Q.5 शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं? शिक्षा दर्शन के स्वरूप की विवेचना कीजिए।

Ans. शिक्षा दर्शन का अर्थ और परिभाषा

शिक्षा दर्शन, दर्शन की वह शाखा है जिसमें शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है और उनका समाधान प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षा दर्शन शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करता है। शिक्षा दर्शन शिक्षा क्या है? शिक्षा के उद्देश्य क्या है? शिक्षा के

Page No.

Date __/__/____

मूल्य क्या है? शिक्षा का पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिये? शिक्षण विधि कैसी हो? अनुशासन की संकल्पना क्या हो? आदि प्रश्नों पर विचार कर के उनका हल प्रस्तुत करता हो।

शिक्षा दर्शन की प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित है-

टी.ई. शील्ड्स के अनुसार- "शिक्षा दर्शन का कार्य शुद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित सत्यों एवं सिद्धान्तों को शैक्षिक प्रक्रिया के संचालन में प्रयोग करता है।"

हैंडरसन के अनुसार- "शिक्षा दर्शन, शिक्षा की समस्याओं में दर्शन का प्रयोग है।"

फिल पैट्रिक के अनुसार- "शिक्षा दर्शन विद्यालय के लोगों को उद्देश्य की प्राप्ति तथा इसमें भी उच्च उद्देश्यों की तैयारी के लिये आवश्यक शिक्षा की क्रियाविधियाँ ज्ञात कराता है।"

इस प्रकार- शिक्षा दर्शन शैक्षिक समस्याओं का तार्किक चिन्तन प्रस्तुत करता है तथा समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास करता है।

---

Q. 6 शिक्षा दर्शन की उपयोगिता और महत्व का वर्णन कीजिए।

Ans. शिक्षा दर्शन के अध्ययन से मनुष्य जीवन के स्वरूप और उसके अन्तिम उद्देश्यों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त

Page No.

Date __/__/____

होता है। इस ज्ञान और अपने स्वयं के अनुभव एवं तर्क के आधार पर प्रत्येक शिक्षक अपना एक दृष्टिकोण बनाता है और उसके आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करता है। शिक्षा दर्शन के अध्ययन से वह मानव जीवन के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के उपायों का भी ज्ञान प्राप्त करता है और उस ज्ञान के आधार पर अपना मार्ग बनाता है। शिक्षा मानव जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है इसलिये उसके उद्देश्य वही होते हैं जो मानव जीवन के उद्देश्य होते हैं। शिक्षादर्शन के अध्ययन से शिक्षक इन सब उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करता है और इस ज्ञान के आधार पर अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये वह अपनी शिक्षा के उद्देश्यों को समझने में समर्थ होता है। बिना उद्देश्यों के स्पष्ट ज्ञान के वह अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता है।

शिक्षा दर्शन के अध्ययन से शिक्षक को ~~भी~~ विभिन्न शिक्षा दार्शनिकों द्वारा निर्मित शिक्षण विधियों का ज्ञान होता है और अध्यापक अपने आदर्शों अर्थात शिक्षा की प्राप्ति के लिये उचित शिक्षण विधियों के चुनाव में सफल होता है। शिक्षा दर्शन में विभिन्न दर्शनों एवं उनके द्वारा अनुशासन की समस्या पर व्यक्त विचारों का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन से शिक्षक अनुशासन के वास्तविक स्वरूप को

Page No.

Date __/__/__

समझता है और उसकी प्राप्ती उपायों की विधियों को जानता है।

इस प्रकार दर्शन के ज्ञान के अभाव में शिक्षक शैक्षिक समस्याओं का वास्तविक समाधान नहीं ढूंढ सकता। इस लिये एक अध्यापक के लिये शिक्षा दर्शन का ज्ञान होना आवश्यक है।

Q.7. शिक्षा और दर्शन एक सिक्के के दो पहलू हैं। समझा कर लिखिए।

Ans. शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि शिक्षा के निश्चित उद्देश्य होते हैं और उद्देश्य दर्शन की सहायता से विकसित किये जाते हैं। वास्तव में दर्शन और शिक्षा एक सिक्के के दो पहलू हैं। एक में दूसरा निहित है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है। अतः शिक्षा और दर्शन का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। लेकिन शिक्षा और दर्शन की प्रक्रिया में अन्तर है। दर्शन का कार्य निहित सत्य पर प्रकाश डालना है इस निहित सत्य को जान लेने पर व्यक्ति समस्या को हल कर लेता है। लेकिन शिक्षा ही व्यक्ति को वह क्षमता प्रदान करती है जिसके द्वारा वह समस्या का समाधान करता है।

Date __/__/__

बिना शिक्षा के व्यक्ति दर्शन को समझ ही नहीं सकता है। यदि शिक्षा साधन है तो दर्शन साध्य है।

फिक्टे के अनुसार "शिक्षा दर्शन की सहायता के बिना पूर्णता और स्पष्टता को प्राप्त नहीं कर सकती।"

जेन्टाइल के अनुसार "शिक्षा दर्शन की सहायता के बिना उचित मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकती है।"

हरबर्ट ~~बालवर~~ के अनुसार "जब तक समस्त दार्शनिक समस्याओं को व्यावहारिक रूप दिया जायेगा तब तक शिक्षा को चैन नहीं आ सकता।"

स्पेन्सर के अनुसार "वास्तविक शिक्षा का संचालन वास्तविक दार्शनिक ही कर सकता है।"

इस प्रकार शिक्षा और दर्शन दोनों का उद्देश्य मनुष्य जीवन की समस्याओं के स्वरूपों, कारणों और उनके समाधान के लिये उपायों की खोज करना है। इस कार्य में दोनों एक दूसरे की सहायता करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा और दर्शन दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं।

Page No.

Date __/__/____

unit II

Q.(8) वेदान्त दर्शन से आप क्या समझते हैं? वेदान्त दर्शन की विशेषतायें लिखिए।

Ans. भारतीय दर्शन की आस्तिकतावादी विचारधाराओं में अद्वैत वेदान्त दर्शन सर्वाधिक प्राचीन सबसे महत्वपूर्ण दर्शन कहा गया है। वेदान्त दर्शन का आधार उपनिषद ही कहे गए हैं। अतः वेदों का अन्तिम भाग वेदान्त होता है। अतः वेदान्त वह शास्त्र है जिसके लिये उपनिषद ही प्रमाण है, वेदान्त कहलाता है। चूँकि उपनिषद अनेक हैं अतः उनके विचारों में सामन्जस्य लाने के उद्देश्य से वेदान्त दर्शन रचा गया है। बादरायण ने ब्रह्म सूत्र की रचना की। बादरायण का ब्रह्मसूत्र चार अध्यायों में बँटा है। पहले अध्याय में ब्रह्म विषयक विचार हैं। दूसरे अध्याय में साधना से सम्बन्धित सूत्र तथा तीसरे ~~x~~ तीसरे व चौथे अध्याय में मुक्ति के फलों के सम्बन्ध में चर्चा की गयी है। यह चारों अध्याय अत्यन्त संक्षिप्त व दुर्बोध थे अतः इन्हें समझने के लिये अनेक भाष्यकारों ने ब्रह्म सूत्र अपने अलग-अलग भाष्य लिखे।

वेदान्त दर्शन की विशेषताएँ -

Page No.

Date ___ / ___ / _____

(1) जगत का मूल कारण ब्रह्म है।
(2) जगत का बोध सत्य ज्ञान पर आधारित है।
(3) माया ईश्वरी रचना है।
(4) जीव चेतन है और उसकी सत्ता व्यावहारिक है।
(5) सृष्टि की रचना ईश्वर की लीला है।
(6) वेदान्त पुर्नजन्म में विश्वास रखता है।
(7) जीव का परम लक्ष्य ~~मोक्ष~~ मोक्ष की प्राप्ति है
(8) ज्ञान से परम ब्रह्म की प्राप्ति तथा मोक्ष मिलता है
(9) वेदान्त सभी दर्शनों का मूल है।
(10) वेदान्त दर्शन का आधार वेद तथा उपनिषद् है।

Q.1 वेदान्त दर्शन का शिक्षा में क्या योगदान है?

Ans. वेदान्त दर्शन केवल दर्शन नहीं है। यह एक मानव को आदर्श व्यक्ति बनाने में महत्व पूर्ण योगदान देता है। वेदान्त शिक्षा में अपना महत्व पूर्ण योगदान देता है यह मानव को अविद्या से हटाकर ज्ञान की ओर ले जाता है। यह भगवान का सच्चा ज्ञान करा कर मोक्ष की प्राप्ती कराता है। वेदान्त दर्शन लौकिक तथा अलौकिक विषयों का ज्ञान प्रदान करता है। जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने की समझ विकसित करता है।

Page No.

Date __/__/____

अतः वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य सत्य रूपी ज्ञान को आत्मसात करना है। यह ज्ञान बालक को सही और गलत में अन्तर करना सिखाता है। व्यावहारिक जीवन को उत्तम तरीके से जीने के लिये प्रेरित करता है। वेदान्त दर्शन मनसा वाचा कर्मणा से किसी को कष्ट न पहुँचाने की सीख देता है। चित्तवृत्तियों का निरोध करना सिखाता है।

वेदान्त दर्शन ने शिक्षा के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिये जिसमें आध्यात्मिक और व्यवहारिक विषयों का समावेश होना चाहिये। पाठ्यक्रम विभिन्न ज्ञान अनुभव व क्रियाओं से युक्त होना चाहिए। वेदान्त दर्शन के अनुसार को ब्रह्मचारी और धर्म मार्ग होना चाहिए गुरु के द्वारा ही ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वेदान्त दर्शन के अनुसार बालक अनन्त अनन्त व असीम शक्तियों से सम्पन्न है उसकी शक्तियों को विकसित करने की आवश्यकता है। वेदान्त दर्शन में आत्म अनुशासन को आवश्यक माना गया है। आत्मसंयम में इन्द्रियों, मन बुद्धि पर नियंत्रण किया जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वेदान्त दर्शन ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया और शिक्षा में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया है।

Page No. ____

Date __/__/__

Q. 10 गीता के दर्शनिक चिन्तन तथा कर्म के सिद्धान्त पर प्रकाश डालिये।

Ans. श्रीमद् भगवत गीता विश्व साहित्य का एक अमूल्य और अनुपम धर्म ग्रन्थ है। इसमें मानव जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मिल जाता है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तरी विभाग २५ के अध्याय से ४२ के अध्याय तक गीता नामक पर्व है जिसमें भगवान कृष्ण ने अपने प्रिय मित्र अर्जुन को उपदेश दिया है इसमे 18 अध्याय है जिसमें 700 श्लोक है भगवत गीता में महाभारत के युद्ध का वर्णन है जिसमें अर्जुन युद्ध के लिये युद्ध भूमि में जाता लेकिन वहाँ अपने सगे सम्बधियो को युद्ध भूमि में देख कर अर्जुन का हृदय दुख से भर जाता है। वह यह सोच कर दुखी हो जाता है कि मुझे अपने सगे सम्बधियो गुरुजनों की हत्या करनी होगी उसका मन व्यथित हो जाता है। उसके अन्दर मोह जागृत हो जाता है अर्जुन की यह स्थिति अध्यात्म जगत में आत्मा के अन्धकार की स्थिति कही जाती है। श्री कृष्ण अर्जुन की इस स्थिति को देख कर उसे युद्ध करने का निर्देश देते है और अर्जुन को स्व कर्म का बोध कराते है। श्रीमद् भगवद् गीता के अनुसार सकाम कर्म ही

Page No.

Date __/__/____

बन्धक का जनक है। इसी लिये भगवान कृष्ण ने निष्काम कर्म का उपदेश दिया है। कर्तव्य-कर्तव्य के लिये यही गीता की शिक्षा है। गीता में कर्मयोगी को अनासक्त भाव से कर्म करने का आग्रह किया गया है। निष्काम कर्म का आचरण ही स्वकर्म है। स्वकर्म के आचरण से ही सिद्ध प्राप्त होती है। अतः श्रीमद भगवद् गीता में मानव जीवन में कर्म की महत्ता को स्वीकार किया गया है। गीता में योग की महत्ता को माना गया है जिस कारण गीता को योगशास्त्र की संज्ञा दी गई है।

गीता के अनुसार आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध जीव और शिव के समन्वय का सिद्धान्त ही योग कहलाता है। इस सम्बन्ध स्थापन के लिये तीन मार्ग बताए है कर्म, भक्ति और ज्ञान इन तीनों का फल ईश्वर की प्राप्ति से है। भगवान श्री कृष्ण कहते है कि सभी धर्मों को त्याग कर केवल मेरी शरण में आ जाओ मैं तुम्हे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा। अन्त में अर्जुन को मोह नष्ट हो जाता है और वह भगवान की आज्ञा का पालन करके युद्ध करता है और विजय प्राप्त करता है।

वास्तव में गीता में अवतारवाद को विशेष बल दिया गया है। गीता के अनुसार ईश्वर नित्य शुद्ध पूर्ण ब्रह्म है और वह अवतार लेता है।

Page No.

Date __/__/____

श्री कृष्ण स्वयं अवतार है इस कारण ही वह निर्गुण ब्रह्म सगुण ईश्वर हो कर गीता में उपदेश दे रहे है।

Unit III

Q. 11 आदर्शवाद का अर्थ और परिभाषा

आदर्शवाद को अंग्रेजी में Idealism कहा जाता है। यह दो शब्दों के योग से बना है Idea विचार तथा ism-वाद अर्थात आदर्शवाद का अर्थ विचारवाद होता है। आदर्शवादी विचारधारा में मन या विचार की सत्ता को स्वीकार करते है। आदर्शवाद के अनुसार विचार ही सत्य और शाश्वत है। पदार्थ गौण होता है क्यों कि वस्तुयें नष्ट हो जाती है परन्तु विचार नष्ट नहीं होते है। आदर्शवाद का सम्बन्ध अध्यात्म से है यह दर्शन की प्राचीन विचारधारा है भारत में इसकी उत्पत्ती ऋषि, मुनियों द्वारा हुयी है पश्चात जगत में सुकरात और प्लेटो के द्वारा हुयी है।

आदर्शवाद पर विभिन्न विचारकों के द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्नलिखित है -

डी. एम. दत्ता के अनुसार " आदर्शवाद वह

Page No.

Date __/__/__

सिद्धान्त है जो अन्तिम सत्ता आध्यात्मिक मानता है।"

बुबेकर के अनुसार - " आदर्शवादी इस बात में विश्वास रखते हैं कि संसार के बोध में मन की मुख्य भूमिका होती है। उनके लिये संसार को समझने के प्रयास में मानसिक क्रिया के अतिरिक्त और कोई वास्तविकता नहीं है।"

जे. एस. रॉस के अनुसार " आदर्शवादी दर्शन के बहुत और विविध रूप हैं परन्तु सभी का आधार भूत तथ्य यही है कि संसार की उत्पत्ति का कारण मन और आत्मा है। वास्तविक रूप मानसिक-चरित्र का रूप है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदर्शवाद अध्यात्म पर विशेष बल देता है और उसे ही अन्तिम सत्ता मानता है। इस विचार धारा के अनुसार मन पदार्थ से उत्तम है। जगत को मन के द्वारा ही जाना जा सकता है। आदर्शवाद सत्यम, शिवम, सुन्दरम् की अवधारणा को स्वीकार करता है। इन्हें सत्य और शाश्वत मानता है।

Page No.

Date / /

Q.12 आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा के कौन-2 से उद्देश्य हैं?

Ans. आदर्शवाद और शिक्षा के उद्देश्य —

(1) आदर्शवाद मानव को सर्वोच्च ईश्वरीय कृति मानता है अतः उसके जीवन का परम लक्ष्य उसके व्यक्तित्व में निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है यह पूर्ण विकास ही आत्मानुभूति कहलाता है। आदर्शवाद के अनुसार आत्मानुभूति की स्थिति में व्यक्ति को सत्यम्, शिवम् एवं सुन्दरम की अनुभूति होती है।

(2) आदर्शवाद के अनुसार सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् आध्यात्मिक मूल्य हैं। शिक्षा का उद्देश्य बालक में इन मूल्यों का विकास करना है।

(3) आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन करना है।

(4) आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक की विवेक शक्ति का विकास करना है।

(5) आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मानव को अपने वातावरण, प्रकृति तथा विश्व की अन्तिम प्रकृति के साथ समन्वय करने की क्षमता प्रदान करना है।

Page No.

Date

Q.13 आदर्शवादी शिक्षा के अनुसार पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए ?

आदर्शवादियों के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम को विभिन्न विद्वानों के द्वारा निम्न प्रकार बताया गया है –

प्लेटो के अनुसार पाठ्यक्रम निम्न प्रकार का होना चाहिये –

1. बौद्धिक साहित्य सम्बन्धी पाठ्यक्रम – भाषा साहित्य, इतिहास व भूगोल के पाठ्यक्रम शामिल हैं।

नैतिक साहित्य सम्बन्धी पाठ्यक्रम – धर्म, अध्यात्म-शास्त्र, दर्शन, नीतिशास्त्र सम्बन्धी पाठ्यक्रम।

कलात्मक साहित्य सम्बन्धी पाठ्यक्रम – कला, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, पाषाण कला आदि का पाठ्यक्रम सम्मिलित हो।

हरबर्ट के अनुसार पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय होने चाहिये :

1. प्रमुख विषय – साहित्य, कविता, संगीत, कला इतिहास आदि
2. गौण विषय – विज्ञान, गणित, भूगोल आदि।

जेम्स रॉस के अनुसार पाठ्यक्रम

1. शारीरिक विकास के पाठ्यक्रम – शारीरिक संरक्षण

Date ___/___/_____

सम्बन्धी- पाठ्यक्रम जैसे स्वास्थ्य विज्ञान और शारीरिक सक्षमता सम्बन्धी पाठ्यक्रम- जैसे व्यायाम।

2. आध्यात्मिक विकास का पाठ्यक्रम -

(1) बौद्धिक विकास सम्बन्धी पाठ्यक्रम - इसमें साहित्य भाषा, इतिहास - भूगोल, गणित जैसे पाठ्यक्रम होने चाहिये।

(2) नैतिक पाठ्यक्रम में नीतिशास्त्र के अध्ययन विषय हो

(3) सौन्दर्य सम्बन्धी पाठ्यक्रम - संगीत व कला के पाठ्यक्रम होने चाहिये।

(4) धार्मिक पाठ्यक्रम - आध्यात्मिक उन्नति के विषय हों।

Q.14 आदर्शवाद तथा शिक्षण विधियाँ-

Ans. आदर्शवाद ने किसी एक शिक्षण विधि का समर्थन नहीं किया है। इनके अनुसार शिक्षक को अपनी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण विधियों का चुनाव करना चाहिये। शिक्षण विधि का चुनाव करते समय बालक की योग्यता क्षमता रुचि का ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षक को शिक्षणविधि का चयन शिक्षा के उद्देश्यों, छात्रों की विशेषताओं और आवश्यकतानुसार करना चाहिये। आदर्शवादी शिक्षण

9 ऽऽ 4821501 8887952145

Date

विधियों के क्षेत्र में अध्यापक को स्वतंत्रता देने के पक्ष में हैं।

आदर्शवादियों के द्वारा प्रतिपादित प्रमुख शिक्षण विधियां निम्नलिखित हैं —

1. संवाद विधि - प्लेटो के द्वारा
2. आगमन तथा निगमन विधि - अरस्तु के द्वारा
3. प्रश्नावली विधि - सुकरात के द्वारा
4. वाद-विवाद विधि - भारतीय आदर्शवादी दार्शनिक के द्वारा
5. निर्देशन विधि - हरबर्ट के द्वारा
6. तर्क विधि - हीगल के द्वारा
7. खेल विधि - फ्रॉबेल के द्वारा
8. आत्मास विधि - पेस्तालॉजी के द्वारा
9. अन्य आदर्शवादी विचारक - कहानी कथन विधि व्याख्यान विधि, नाटक विधि

---

Q. 15 आदर्शवाद किस प्रकार के अनुशासन पर बल देता है?

Ans. आदर्शवादियों के अनुसार अनुशासन बालकों के पूर्ण विकास के लिये आवश्यक है। आदर्शवादी शिक्षा के उद्देश्यों में बालक के आध्यात्मिक विकास, आत्मानुभूति तथा पूर्णता के विकास को प्रधानता दी गई है। आदर्शवादियों के अनुसार इनकी पूर्ति अनुशासन

Page No.

Date __/__/____

द्वारा ही सम्भव है। आदर्शवाद ~~आत्मानुशासन~~ बालक में स्वानुशासन का समर्थन करते हैं। आदर्शवादी दमनात्मक अनुशासन के प्रबल विरोधी हैं। फ्रॉबेल ने लिखा है कि "बालक की रुचि का ध्यान रखते हुये प्रेम तथा सहानभूति पूर्ण व्यवहार करते हुये छात्र पर नियंत्रण रखना चाहिए। आदर्शवादी कठोर अनुशासन के विरोधी हैं। बालक को आत्मानुशासन के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये।

---

2.16 आदर्शवाद और विद्यालय पर टिप्पणी लिखिये।

8. आदर्शवाद और विद्यालय

आदर्शवादियों ने शिक्षा के लिये विद्यालय को अत्यन्त आवश्यक माना है। उनके अनुसार बालक का शारीरिक, मानसिक, संस्कृतिक सामाजिक, आध्यात्मिक विकास विद्यालय में ही सम्भव है। विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बालक पूर्ण विकास होता है। विद्यालय का वातावरण प्रभावशाली होना चाहिये। विद्यालय का भवन अच्छा होना चाहिये तथा पर्याप्त रोशनी हवा और ~~पानी~~ पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिये।

Page No.

Date __/__/____

शिक्षण से सम्बंधित सभी सहायक सामग्री विद्यालय में होनी चाहिये। विद्यालय में खेल का मैदान अवश्य होना चाहिये। विद्यालय के आदर्श वातावरण में रह कर बालक का पूर्ण विकास सम्भव है।

Q.17 आदर्शवाद की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans. 1. आदर्शवाद बालक के पूर्ण विकास पर बल देता है।

2. आदर्शवाद ने शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया है।

3. आदर्शवाद ने सत्यम्, शिवम् सुन्दरम् को शिक्षा का आधार माना है।

4. आदर्शवाद ने आत्मानुशासन पर विशेष बल दिया है। उन्हों ने कठोर अनुशासन का विरोध किया है।

5. आदर्शवादियों ने शिक्षक की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण विधियों के चयन की स्वतंत्रता प्रदान की है।

Date __/__/__

6. वस्तुओं में भिन्नता होते हुए भी एकता के स्वरूप का समर्थन किया है।

7. छात्रों के आध्यात्मिक विकास पर बल दिया है।

8. छात्रों में ~~आत्मानुभूति~~ आत्मानुभूति पर बल दिया है।

Q.18 आदर्शवाद का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा है? समझाकर लिखिये।

Ans भारतीय शिक्षा पर आदिकाल से आदर्शवाद का प्रभाव रहा है। वैदिक काल में शिक्षा का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उस काल में शिक्षा आदर्शवादी विचार धारा के अनुकूल थी। शिक्षा के क्षेत्र में यही एक ऐसी विचार धारा है जो आदर्श मूल्यों, सत्यों पर आधारित है। आदर्शवाद की सबसे बड़ी देन है कि वह बालक को ऐसी शिक्षा देने पर बल देता है जो उसके चरित्र का निर्माण करे और आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करे। आदर्शवाद शिक्षा को पवित्र कार्य मानता है। शिक्षार्थी का व्यक्तित्व उसके लिये महान है। अतः वह छात्र का पूर्ण विकास करना चाहता है।

Page No.

Date / /

आदर्शवाद का शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रभाव रहा है। आदर्शवाद शिक्षा की दिशा निश्चित करने में शिक्षाशास्त्रियों का मार्गदर्शन करता है।

Q.19 प्रकृतिवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans. प्रकृतिवाद दर्शन की भौतिकवादी विचारधारा है। यह भौतिक संसार को ही सत्य मानती है। सृष्टि की वास्तविक रचना प्रकृति के द्वारा हुयी है जो कुछ प्रकृति में घटित होता है वही प्रकृतिवादी विचारों का आधार है। प्रकृतिवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति से पैदा होता है और उसी में विलीन हो जाता है। यह विचारधार आध्यात्मिक सत्ता में विश्वास नहीं करती है।

ब्राइस के शब्दों में- "प्रकृतिवाद एक प्रणाली है और जो कुछ आध्यात्मिक है उसका बहिष्कार ही उसकी प्रमुख विशेषता है।"

मॉरले के अनुसार - "सबसे प्रेम करना, मानव प्रकृति में पूर्ण विश्वास करना, न्याय की सदा कामना करना और साधारणतया संतोष के साथ काम करना, जिससे दूसरों का उपकार हो, यही प्रकृतिवाद का स्वरूप है।"

Date __/__/____

Q.20 प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा के कौन-कौन से प्रमुख उद्देश्य है?

प्रकृति वाद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य –

(1) प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक को पूर्ण जीवन के लिये तैयार करना।

(2) बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण करना।

(3) बालक के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास करना।

(4) वातावरण के साथ अनुकूलन करने की क्षमता का विकास करना।

(5) जीवन संघर्ष के लिये शक्ति का विकास करना।

(6) मनुष्य को प्राकृतिक जीवन जीने योग्य बनाना।

(7) जातीय गुणों का संरक्षण करना।

(8) मानव जीवन को सुखी बनाना।

Page No.

Date __/__/____

प्रकृति वाद और शिक्षक।

Q.21

Ans. प्रकृति वाद और शिक्षक-

प्रकृतिवादी प्रकृति को ही सबसे उत्तम शिक्षक मानते हैं। प्रकृतिवादी शिक्षक को शिक्षा में गौण स्थान देते हैं उनका मानना है कि प्रकृति ही बालक की वास्तविक शिक्षक है। बालक प्रकृति के माध्यम से स्वतः ही सीख सकता है। अतः शिक्षक को उसकी शिक्षा में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये, बल्कि उसके स्वभाविक विकास में सहायता देनी चाहिए। प्रकृति वाद में शिक्षक का कोई स्थान है, तो वह पर्दे के पीछे का है। शिक्षक का कार्य बालक के लिये उपयुक्त वातावरण तैयार करना है। बालक में इतनी योग्यता है कि वह अपना विकास स्वयं कर सकता है। शिक्षक का कार्य उसको निर्देशन प्रदान करना है उसका निरीक्षण करना है। इस प्रकार प्रकृतिवादी शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक को गौण स्थान प्रदान करते हैं। बालक का मुख्य स्थान है।

Q.22 प्रकृतिवाद और अनुशासन।

Ans. प्रकृतिवादी प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन को

Page No.

Date __/__/__

मानते हैं वह किसी भी बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं अतः अनुशासन की दृष्टि से प्रकृतिवादी बालक को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्ष में हैं। उनका कहना हैं कि प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने पर प्रकृति क्षमा नहीं करती हैं वह प्रकृति द्वारा दण्डित किया जाता हैं। रूसो बालक को दंड देने का विरोधी हैं। वह बालक को पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहता हैं। लेकिन कई विद्वानों ने प्रकृतिवादी इस अनुशासन की कटु आलोचना की हैं। प्रकृतिवादी हक्सले, रूसो व स्पेन्सर के अनुशासन के सिद्धान्त से असहमत हैं। उनके अनुसार प्राकृतिक दण्ड व्यवस्था कठोर हैं जो बच्चों के लिये विकट स्थितियाँ उत्पन्न कर सकती हैं। उनके अनुसार "हमें बच्चों को अपना स्वाभाविक विकास करने की स्वतंत्रता तो देनी चाहिये पर इसके साथ-साथ उन्हें कुछ उत्तरदायित्व भी देना चाहिये तभी उनका व्यवहार संतुलित हो सकता हैं।"

Q-23 प्रकृति वाद और शिक्षण विधियाँ

Ans. प्रकृतिवाद ने समाज, सभ्यता तथा संस्कृति विरोधी होने के कारण परम्परागत शिक्षण विधियों की कटु आलोचना की हैं। प्रकृतिवादी अनुभव द्वारा सीखने पर अधिक बल देते हैं। प्रकृतिवादी प्रकृति के पथ का अनुसरण करने पर अधिक

Date __/__/____

बल देते हैं। रॉस के अनुसार - "प्रकृतिवादी शिक्षक स्वयं के प्रतिवादन के विषय में कम सोचते हैं लेकिन शिक्षार्थी के अधिगम जन्य अनुभव के विषय में अधिक विचार करते हैं।"

प्रकृतिवादी निम्नलिखित शिक्षण विधियों का ~~समर्थन~~ समर्थन करते हैं -

(1) क्रिया द्वारा सीखना.
(2) स्वानुभव द्वारा सीखना.
(3) प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सीखना.
(4) खेल द्वारा सीखना.

Q.24 प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans. प्रकृतिवाद प्रकृति को ही सत्य मानता है। प्रकृतिवादी शिक्षा को स्वभाविक विकास की प्रक्रिया मानते हैं। उनके विचार में बालक को स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिये जिससे वह स्वयं अपने अनुभव द्वारा सीखे। रूसो के अनुसार "सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अन्दर से प्रस्फुटित होती है। यह उसकी अन्तर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है। मानव को समाज के बाह्य आडम्बरों से हटा कर स्वाभाविक जीवन की ओर ले जाना ही प्रकृतिवाद का मुख्य मंत्र है। इनके अनुसार शिक्षा प्रक्रिया में में बालक का मुख्य स्थान है। शिक्षा बालक के

Page No.

Date __/__/____

लिये है बालक शिक्षा के लिये नहीं है।

---

Q.25 प्रकृतिवाद की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans. प्रकृतिवाद की प्रमुख विशेषताएँ

(1) प्रकृति ही वास्तविकता है

प्रकृतिवाद प्रकृति को अन्तिम सत्ता मानता है। यह इस बात पर विश्वास करता है कि सम्पूर्ण संसार की रचना प्रकृति के द्वारा हुई है। प्रकृति ही सम्पूर्ण सृष्टि कर्ता और कारण है। प्रकृति के पीछे या प्रकृति के अलावा कोई अन्य चीज अपना अस्तित्व नहीं रखती है। भौतिक जगत ही सत्य है। आध्यात्मिक जगत का कोई अस्तित्व नहीं है।

(2) मन या शरीर में कोई अन्तर नहीं है —

प्रकृतिवादी विचारधारा मन और शरीर में कोई अन्तर नहीं करती है। वह यह मानती है कि मानव-पदार्थ है चाहे उसका मन हो या शरीर दोनों ही इस पदार्थ का परिणाम है।

Page No.

Date / /

(3) वैज्ञानिक ज्ञान पर बल -

प्रकृतिवाद यह भी मानता है कि वैज्ञानिक ज्ञान ही उचित ज्ञान होता है और हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम इस वैज्ञानिक ज्ञान को जीवन से जोड़ सके। ज्ञान प्राप्ति का सर्वोचित तरीका निरीक्षण विधि है।

(4) ज्ञान-प्राप्ति हेतु इन्द्रियों की आवश्यकता

प्रकृतिवाद के अनुसार इन्द्रियाँ ही ज्ञान प्राप्ति के द्वारा है। मानव इस जगत में जो भी ज्ञान प्राप्त करता है उसका माध्यम इन्द्रियाँ होती है। इन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है वह वास्तविक ज्ञान होता है।

(5) आत्मा और परमात्मा का कोई महत्व नहीं है

प्रकृतिवादी किसी आध्यात्मिक शक्ति या आत्मा में विश्वास नहीं रखते हैं। प्रकृतिवाद का मानना है कि मनुष्य की रचना प्रकृति के ~~द्वारा~~ द्वारा हुयी है और जो उसमें आत्मा है वह भी प्रकृति जन्य है। जब शरीर नष्ट हो जाता है तो आत्मा भी नष्ट हो जाती है।

(6) भौतिक सुख की प्राप्ती - प्रकृतिवाद मानव

Page No.

Date __/__/____

जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति को मानता है। इस कारण मानव परिस्थिति को अपने अनुकूल ढालता है। सुख पूर्वक जीवन ~~जीवित~~ जीना मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य है।

(7) वैयक्तिक स्वतंत्रता पर बल

प्रकृतिवाद यह भी मानता है कि व्यक्ति दुखी इस कारण है कि वह प्रकृति से दूर होता जा रहा है। व्यक्ति को इतनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिये कि वह प्रकृति से समीपता स्थापित कर सके। प्रकृतिवाद ने बालक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है। बालक को अपनी रुचि क्षमता और योग्यता के आधार पर सीखने की स्वतंत्रता होनी चाहिये।

(8) मूल्य प्रकृति में ही निहित है—

मूल्य का निर्धारण आदर्शवादी विचार धारा के अनुसार समाज द्वारा होता है जब कि प्रकृतिवादी यह मानते हैं कि मूल्य प्रकृति में ही विद्यमान रहते हैं और यदि मानव मूल्यों की प्राप्ति चाहता है तो उसे प्रकृति से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करना होगा।

Date __/__/__

Q.26 रूसो की 'निषेधात्मक शिक्षा' से आप क्या समझते हैं?

Ans. रूसो ने एक प्रकृतिवादी विचारक के रूप में जिस शिक्षा के स्वरूप पर बल दिया है उसे 'निषेधात्मक शिक्षा' कहा जाता है। रूसो के अनुसार "मैं निषेधात्मक शिक्षा उसे कहता हूँ जो ज्ञान देने से पूर्व ज्ञान ग्रहण करने वाले अंगों को दृढ़ बनाती है। निषेधात्मक-शिक्षा में बालक को बालक मान कर शिक्षा दी जाती है। बालक को अपनी रुचि क्षमता और योग्यता के आधार पर स्वतंत्र वातावरण में ज्ञान प्रदान किया जाता है। बालक पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला जाता है। निषेधात्मक शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान का विरोध करती है। रूसो के अनुसार बालक स्वयं क्रिया करके अपने अनुभव के द्वारा ज्ञान प्राप्त करे। रूसो ने ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने पर अधिक बल दिया है। क्यों कि ज्ञानेन्द्रियाँ ही ज्ञान के द्वारा हैं इनके द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी ज्ञान होता है।

Q.27 वर्तमान सन्दर्भ में प्रकृतिवाद के महत्व का वर्णन कीजिए।

Ans. शिक्षा प्रक्रिया में बालक का प्रमुख स्थान प्रकृतिवाद की विशेषता है। अतः बाल केन्द्रित शिक्षा प्रकृतिवाद

Date __/__/____

1- की देन है।

2- बाल मनोविज्ञान के अध्ययन की प्रेरणा भी इसी विचारधारा ने दी। बालक को पढ़ने के लिये उसके मनोविज्ञान को जानने की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मनोविज्ञान के क्षेत्र में खोज प्रारम्भ हुयी।

3- शिक्षा की विधि में प्रकृतिवाद ने अनुभवों पर अधिक बल दिया।

4- शिक्षा में खेल की प्रमुखता इस विचारधारा की देन है।

5- "प्रकृति की ओर लौटो" इस विचारधारा का नारा है।

6- प्रकृतिवाद ने पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान पर अधिक बल दिया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रकृतिवाद ने शिक्षा में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्पष्ट निर्माण में प्रत्यक्ष प्रेरणा दी। प्रकृतिवाद ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Date __/__/____

Q.28 प्रयोजनवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans: प्रयोजनवाद को अंग्रेजी में प्रेग्मेटिज्म कहते हैं, जो ग्रीक भाषा के प्रेग्मा शब्द से बना है जिसका अर्थ व्यावहारिकता और क्रिया से होता है। यह दर्शन मनुष्य के व्यावहारिक पक्ष पर ही विचार करता है और समस्त सृष्टि को क्रियाओं का परिणाम मानता है इस लिये इसे अंग्रेजी में प्रेग्मेटिज्म कहते हैं;
विभिन्न विद्वानों के द्वारा दी गयी प्रयोजनवाद की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

रॉस के अनुसार " प्रयोजन वाद निश्चित रुप से एक मानवतावादी दर्शन है जो यह मानता है कि मनुष्य क्रिया में भाग लेकर अपने मूल्यों का निर्माण करता है और यह मानता है कि वास्तविकता सदैव निर्माण के अवस्था में रहती है।"

हेंडरसन (Henderson) के अनुसार "प्रयोजन वाद के अनुसार यदि कोई बात अनुभव में कार्य करती है तो वह उसको सत्य बनाती है। किसी भी सिद्धान्त की सत्यता उसकी दक्षता से जानी जाती है, जिसके द्वारा यह कार्य हो अथवा जिससे यह मानव की क्रियाओं को मानवीय उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये निर्देशन का कार्य कर सके।"

Page No.

Date __/__/__

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रयोजनवादी वह दर्शन है जो सत्य की पुष्टि उसकी क्रिया पर आधारित अनुभवों से प्राप्त फल से मानते हैं। प्रयोजनवाद मानता है कि सत्य परिवर्तनशील है। कोई भी बात तभी सत्य हो सकती है जब वह उपयोगी हो। प्रयोजनवाद व्यावहारिक उपयोगिता वाले विचारों को ही सत्य मानता है।

Q.29 प्रयोजनवाद की प्रमुख विशेषतायें बताइए।

Ans. प्रयोजनवाद की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं —

1. विचार की अपेक्षा क्रिया को अधिक महत्व

यह विचारधारा प्राचीन मान्यताओं और परम्पराओं का विरोध करती है। यह विचारों की अपेक्षा क्रियाओं को अधिक महत्व देती है। इस विचारधारा के अनुसार वास्तविकता एक निर्माणशील प्रक्रिया है और उसके सम्बन्ध में हम किसी भी सामान्य सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं कर सकते हैं। वह यह मानते हैं कि सत्य तो व्यावहारिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है और ज्ञान भी क्रियाओं का ही परिणाम है।

Date __/__/__

2. शाश्वत मूल्यों का बहिष्कार

प्रयोजनवाद किसी निश्चित अथवा शाश्वत सत्य अथवा सिद्धान्त की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। इस विचारधारा के अनुसार मूल्य तो मानव की व्यक्तिगत व सामाजिक घटनाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं जो सदैव परिवर्तनशील होते हैं।

3. विचार क्रिया के अधीन होते हैं

प्रयोजनवाद क्रिया को सर्वोच्च स्थान देता है। वह यह मानता है कि कोई भी विचार तभी सार्थक हो सकता है जब हम उसे क्रिया रूप में हस्तांतरित करें। इस विचारधारा के अनुसार क्रिया ही विचारों को अर्थ प्रदान करती है और उनका महत्व निर्धारित करती है।

4. उपयोगिता के सिद्धान्त पर बल

प्रयोजनवाद इस सिद्धान्त पर विश्वास करता है कि कोई बात या सिद्धान्त तभी तक सत्य है जब तक उसकी उपयोगिता है। यदि कोई सिद्धान्त मानव के उद्देश्यों को पूरा करता है तो वह सत्य है अन्यथा नहीं।

5. ईश्वरी शक्ति में विश्वास नहीं

प्रयोजनवाद ईश्वर में विश्वास नहीं करता है।

Page No.

Date __/__/____

वह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को एक क्रियाशील तत्व के रूप में स्वीकार करता है। इस विचारधारा के अनुसार- सर्वोच्च सत्ता समाज की है।

6. व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर बल

प्रयोजनवाद व्यक्ति को एक सामाजिक इकाई के रूप में स्वीकार करता है। बालक के व्यक्तित्व का विकास समाज में ही होता है। व्यक्ति समाज में रहकर ही अपने जीवन को सफल बना सकता है।

7. प्रजातंत्र में आस्था

प्रयोजनवाद प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था का ~~समर्थन~~ समर्थन करता है। वह प्रजातंत्र को जीवन का एक तरीका व अनुभवों का आदान-प्रदान करने की एक व्यवस्था के रूप में देखता है।

8. बहुतत्व वादी विचारधारा

प्रयोजनवाद बहुतत्व वाद का समर्थक है। प्रयोजनवाद यह मानता है कि इस संसार की रचना अनेक तत्वों के संयोग से हुयी है। इन तत्वों के मध्य क्रिया चलती रहती है जिसके परिणाम स्वरूप रचनात्मक कृति होती है इसी कारण यह संसार सदैव निर्माण की अवस्था में रहता है।

Date __/__/__

Q.30 प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा के कौन-कौन से उद्देश्य हैं?

प्रयोजन वाद के अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. सामाजिक कुशलता का विकास।
2. लोकतान्त्रिक आदर्शों का विकास।
3. गतिशीलता का विकास।
4. बालकों का सर्वांगीण विकास।
5. नवीन मूल्यों का निर्माण करने की योग्यता का विकास।
6. सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करने की योग्यता का विकास।

Q.31 प्रयोजनवाद के अनुसार पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिये?

Ans. प्रयोजनवादी किसी निश्चित पाठ्यक्रम में विश्वास नहीं करते हैं। इनके अनुसार पाठ्यक्रम अनुभवों पर आधारित होना चाहिये। पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिये ताकि आवश्यकता के अनुसार उसमें परिवर्तन किया जा सके। प्रयोजन ~~वादी~~ वादियों ने पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है जो निम्न लिखित हैं—

Page No.

Date ___/___/___

1. उपयोगिता का सिद्धान्त — ~~पक्षों में~~

प्रयोजनवादियों के अनुसार पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों को स्थान देना चाहिये जो बालकों के भावी जीवन में उपयोगी हो। इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में भाषा, स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक प्रशिक्षण, इतिहास, भूगोल, गणित विज्ञान बालिकाओं के लिये गृहविज्ञान को स्थान देना चाहिये।

2. एकीकरण का सिद्धान्त

पाठ्यक्रम में सभी विषयों को एक दूसरे से जोड़ कर रखना चाहिये। ~~अलग~~ सभी विषय एक दूसरे से सम्बंधित हो क्यों कि ज्ञान एक अखण्ड इकाई है इसे पृथक नहीं किया जा सकता है।

3. बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम —

प्रयोजनवाद के अनुसार पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होना चाहिये। पाठ्यक्रम में बालक की रुचि क्षमता और योग्यता का पूरा ध्यान रखना चाहिये।

Date __/__/____

4. अनुभव पर आधारित

प्रयोजन वाद के अनुसार पाठ्यक्रम अनुभवों पर आधारित होना चाहिये। पाठ्यक्रम में सामाजिक क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिये।

5. क्रिया का सिद्धान्त

पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान होना चाहिये। क्रिया साउद्देश्य हो तथा चिन्तन शक्ति को प्रदीप्त करे।

Q.32 प्रयोजन वाद के अनुसार शिक्षा का क्या अर्थ है?

Ans. प्रयोजन वाद के अनुसार शिक्षा मनुष्य के विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा का कार्य बालक का सामाजिक करण करना है। प्रयोजन वाद सामाजिक मूल्य को अधिक महत्व देता है। सामाजिक कार्यों में भाग लेना सबसे महत्व पूर्ण है जिसके द्वारा शिक्षा प्राप्त होती है। शिक्षा का कार्य बालक की मूल प्रवृत्तियों, शक्तियों रुचियों आवश्यकताओं और इच्छाओं का अध्ययन करके अनुकूल सामग्री प्रस्तुत करना है। जिससे बालक के व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके।

Page No.

Date __/__/__

जॉन डीवी के अनुसार "शिक्षा व्यक्ति की उनसब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करता है।"

=

Q.33 प्रयोजनवाद और विद्यालय

Ans. प्रयोजनवाद विद्यालय को एक सामाजिक संस्था मानता है जहाँ बालक के सामाजिक करण की प्रक्रिया होती है। विद्यालय समाज का लघु रूप है। विद्यालय में बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है। विद्यालय में बालक को सामाजिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है जिससे उसमें सामाजिक कुशलता का विकास होता है। विद्यालय में बालक सब के साथ मिलजुल कर रहना एक दूसरे का सहयोग करना, दया प्रेम, परोपकार जैसे सद्गुणों को सीखता है। विद्यालय ही बालक को लोकतांत्रिक आचरण की शिक्षा प्रदान करता है जिससे उत्तम नागरिकता का प्रशिक्षण मिलता है। प्रयोजनवादी सामाजिक वातावरण को आवश्यक मानते हैं। विद्यालय में बालक उद्देश्य पूर्ण क्रियाओं में भाग लेकर स्वयं के अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है और सामाजिक जीवन की व्यावहारिक समस्याओं

Date __/__/____

को सुलझाता है। इसी लिये प्रयोजनवादी विद्यालय को एक आवश्यक आवश्यकता के रूप में स्वीकार करते हैं। प्रयोजनवादी विद्यालय को सामाजिक संस्था मानते हैं तथा परम्परागत विद्यालय के विरोधी हैं। विद्यालय में बालक को सैद्धान्तिक ज्ञान का ही नहीं वरन् व्यावहारिक, प्रायोगिक कार्य को सामूहिक रूप में करने का अवसर मिलना चाहिये।

Q.34 प्रयोजनवादी शिक्षा के गुण और दोषों की विवेचना कीजिए।

Ans. प्रयोजनवादी शिक्षा का मूल्यांकन

गुण - प्रयोजनवादी शिक्षा के निम्नलिखित गुण हैं-

1. प्रयोजनवाद शिक्षा प्रक्रिया में बालक को महत्वपूर्ण स्थान देता है।
2. प्रयोजनवादी पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान को अधिक महत्व पूर्ण मानते हैं।
3. प्रयोजनवादी शिक्षक को एक मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं।
4. प्रयोजनवादी सामाजिक अनुशासन पर अधिक बल देते हैं।
5. प्रयोजनवाद विद्यालय को समाज का लघु रूप मानता है जहाँ सामाजिकरण की प्रक्रिया होती है।

Date __/__/____

दोष

(1) प्रयोजनवाद आध्यात्मिक विचारों का विरोध करता है।
(2) प्रयोजन वाद भौतिकता को अधिक महत्व देता है।
(3) प्रयोजनवादी बालक के वाह्य पक्ष पर अधिक बल देते हैं।
(4) प्रयोजन वादी सीखने की प्रक्रिया में अनुभव को महत्व पूर्ण स्थान देते हैं।
(5) प्रयोजनवाद व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देता है।

## Unit-IV

Q.35 गाँधी जी के सर्वोदय दर्शन की व्याख्या कीजिये।

Ans. गाँधी जी के जीवन दर्शन में सत्य का उच्चतम स्थान है। वे ईश्वर और सत्य में कोई अन्तर नहीं मानते थे। गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन सत्य के लिये एक प्रयोग था।
गाँधी जी का जीवन दर्शन ~~आदर्श~~ आदर्शवाद पर आधारित था। उन्हें ईश्वर में अटल विश्वास था। उनका जीवन दर्शन मूलतः गीता पर आधारित था। गाँधी जी ने भारतीय दर्शन के

Page No.

Date __/__/__

मूल तत्वों को वास्तविक रूप दिया। गाँधी जी का यह दर्शन सर्वोदय दर्शन के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी इस बात से सहमत थे कि मूल तत्व दो हैं- पुरुष और प्रकृति (पदार्थ) और इनमें ईश्वर श्रेष्ठ है। ईश्वर प्रकृति के कण कण में विद्यमान है। वही इस संसार का पालनहार है। और विनाशकर्ता भी है। उन्हों ने ईश्वर को परम सत्य के रूप में माना है। गाँधी जी के अनुसार ईश्वर अपरिवर्तनशील है। प्रकृति परिवर्तनशील है इसी लिये असत्य है। गाँधी जी आत्मा को परमात्मा का अंश मानते थे और चूँकि परमात्मा सत्य है तो आत्मा भी सत्य है। गाँधी जी मनुष्य को शरीर, मन व आत्मा का योग मानते थे, मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य आत्म ज्ञान ईश्वर की प्राप्ती और मोक्ष प्राप्ती है।

---

Q.36 बेसिक शिक्षा से आप क्या समझते हैं ?

Ans. गाँधी जी की भारतीय शिक्षा को सबसे बड़ी, सबसे महत्व पूर्ण देन बेसिक शिक्षा है। इसे बुनियादी और वर्धा शिक्षा योजना भी कहा जाता है। गाँधी जी ने अपने जीवन दर्शन के क्षेत्र में शिक्षा प्रणाली के रूप में इसे अनुभव, परीक्षण और प्रयोगों के बाद उतारा। यह शिक्षा योजना गाँधी जी के विचारों का मूर्त

Page No.

Date __/__/____

रूप है। बेसिक शिक्षा का जन्म 22-23 अक्टूबर 1937 को "अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन" जिसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन भी कहते हैं, में हुआ था। बेसिक शिक्षा में गाँधी जी ने निम्नलिखित विचार व्यक्त किये—

1. देश के सम्पूर्ण बालकों के लिये 7-14 वर्ष तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की जाये।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
3. शिक्षा में एक उत्पादक उद्योग सम्मिलित किया जाये, जो स्थानीय परिस्थितियों और वातावरण के अनुकूल हो।
4. विद्यार्थी द्वारा किये गये उत्पादन से शिक्षकों के वेतन की व्यवस्था की जाये।
5. बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि सात वर्ष की हो।
6. पाठ्यक्रम में अंग्रेजी भाषा को कोई स्थान न दिया जाये।

गाँधी जी की इस शिक्षा योजना को व्यावहारिक रूप देने के लिये जामिया मिलिया ~~दिल्ली~~ दिल्ली के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने दिसम्बर 1937 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस योजना के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने हेतु अप्रैल 1938 में सेवा ग्राम में अखिल

Page No.

Date __/__/____

भारतीय शब्दीप शिक्षा परिषद की स्थापना की गई। कांग्रेस के मंत्रिमण्डल ने भी इस योजना को अपने-अपने प्रान्तों में लागू करना आरम्भ कर दिया था।

Q.37 बुनियादी शिक्षा के गुण एवं दोषों पर प्रकाश डालिए।

Ans. गुण-

1. बेसिक शिक्षा या बुनियादी शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। इस शिक्षा में इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास एक साथ हो सके।
2. इस शिक्षा के अन्तर्गत छात्र परस्पर सहयोग से कार्य करना सीखते हैं।
3. बेसिक शिक्षा प्रणाली पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसके अन्तर्गत बालक क्रिया द्वारा स्वयं सीखता है।
4. इस प्रणाली में छात्र को आत्माभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।
5. बेसिक शिक्षा बालक के जीवन से सम्बद्ध करके प्रदान की जाती है।
6. बुनियादी शिक्षा बालक में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान की भावना का निर्माण करती है।
7. बुनियादी शिक्षा का प्रयोजन बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना है।

Page No. ☐

Date __/__/____

## दोष

1. यह शिक्षा प्रणाली केवल प्राथमिक शिक्षा पर अधिक बल देती है। माध्यमिक और उच्च शिक्षा की इसमें उपेक्षा की गई है।
2. बेसिक शिक्षा नगरों की अपेक्षा गाँवों हेतु अधिक उपयुक्त है क्यों कि इसके अन्तर्गत जिन हस्तशिल्पों पर जोर दिया गया है वे गाँव के वातावरण से अधिक सम्बंधित हैं।
3. बेसिक शिक्षा में धर्म को कोई ध्यान नहीं दिया गया है।
4. शिक्षा में हस्त कौशल की शिक्षा पर अधिक बल दिया गया है।
5. बुनियादी शिक्षा के ~~अन्तर्गत~~ अन्तर्गत उत्पादन सिद्धान्त पर बल दिया गया है। इससे शिक्षण कार्य समाप्त ही हो जाता है और विद्यालय औद्योगिक केन्द्र जैसे लगने लगते हैं।

Q. 38 स्वामी जी के जन शिक्षा के सम्बन्ध में क्या विचार है?

Ans. स्वामी विवेकानन्द जी ने अनुभव किया था कि देश की राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक विपन्नता सामाजिक पिछड़ापन और धार्मिक अंधविश्वास इन सब का मूल कारण अशिक्षा है। उन्होंने उद्घोष

किया कि जब तक भारत के सभी नर-नारी शिक्षित नहीं होते हैं तब तक हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते हैं। इन्होंने समाज और राज्य से जन शिक्षा की व्यवस्था की अपेक्षा की। जन शिक्षा से स्वामी जी का तात्पर्य बच्चों, युवकों और अशिक्षित प्रौढ़ों सबको शिक्षित करने से था। इन्होंने शिक्षित लोगों का आवाहन किया कि वे अशिक्षित प्रौढ़ो और वृद्धों को साक्षर बनाएँ, उन्हें शिक्षित करें। उनके विचार में जन साधारण की उपेक्षा करना देश के पतन का कारण है। राजनीति को सशक्त करने के लिये जन साधारण को भली प्रकार शिक्षित करके संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

Q.39 डॉ भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन पर प्रकाश डालिए।

Ans. भीमराव अम्बेडकर को अधिकांश लोग एक महान राजनीतिज्ञ और अछूतोद्धारक मानते हैं किन्तु उन्होंने मानव जीवन और समाज की प्राण अर्जा के रूप में जो महत्वपूर्ण कार्य किया वह भारतीय संविधान का निर्माण किया और उसमें शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। डॉ भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों का फलक बहुत विस्तृत है जिसमें न केवल अस्पृश्य

Date / /

वर्ग की शिक्षा के सरोकार है बल्कि स्त्री एवं अल्पसंख्यकों की शिक्षा तथा उनकी गहन शैक्षिक दृष्टि भी समाहित है। धर्म एवं राजनीति को भी डॉ अम्बेडकर ने अपने शिक्षा दर्शन में महत्व पूर्ण स्थान दिया है। उन्हों ने शिक्षा को प्रगति का आधार बताया।

## शिक्षा दर्शन के मूल आधार

1. शिक्षा मानवता को प्रबुद्ध करने का साधन होनी चाहिए जो वर्णाश्रम व अज्ञान की दीवार का भेदन कर सके।
2. शिक्षा को अन्धविश्वास, रूढ़ियों को तोड़ने का सबल आधार होना चाहिए।
4. डॉ अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा का प्रमुख सन्देश मानव सेवा होना चाहिए।
5. इनके अनुसार शिक्षा पुरानी अव्यावहारिक धारणाओं को कुचलने में इतनी समर्थ होनी चाहिए जिससे दोषयुक्त व्यवहारों में परिवर्तन हो सके।
6. शिक्षा का स्वरूप भ्रामक न होकर सरल होना चाहिए।
7. शिक्षा को नवीन चुनौती से लड़ने की योग्यता देने की क्षमता हासिल करनी चाहिए जिससे सामाजिक परिवर्तन की यात्रा सुगम हो सके।

Page No.

Date __/__/____

शिक्षा के द्वारा छात्र में सद्गुण धारण करने की शक्ति का विकास होना चाहिए इससे न्याय व समानता के सिद्धान्त को भी पोषण मिलना चाहिए। शिक्षा वास्तविक जीवन पर अवलम्बित होनी चाहिए। जिससे सामाजिक, राजनीतिक, सौन्दर्यात्मक ता और नैतिकता के सही मानदण्ड छात्र में विकसित हो सके।

शिक्षा वह कारक बने जो मनुष्य के स्वयं की भूमिका के महत्व को समझने में समर्थ हो।

---

Q.40 रूसो की निषेधात्मक शिक्षा क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताएं बताएँ।

Ans. निषेधात्मक शिक्षा को नकारात्मक शिक्षा भी कहते हैं। निषेधात्मक शिक्षा निश्चयात्मक शिक्षा के ठीक विपरीत है। यह शिक्षा बालक के स्वभाव के अनुकूल होती है। इस प्रकार की शिक्षा में बालक को कार्य करने की स्वतंत्रता रहती है तथा बालक अपनी रुचि, क्षमता और योग्यता के अनुसार सीखता है। उस पर ध्यान थोपा नहीं जाता है। न ही बालक के ऊपर किसी प्रकार का दबाव डाला जाता है। रूसो इसी प्रकार की शिक्षा के पक्षपाती थे। उनके अनुसार ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्राप्त शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है।

Page No. ____

Date __/__/__

रूसो ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान का प्रवेश द्वार मानते है उनके अनुसार सबसे पहले ज्ञानेन्द्रियों का विकास होना चाहिए, जिससे ज्ञान का विकास स्वत: हो जायेगा।

## निषेधात्मक शिक्षा की विशेषताएँ

1. इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान पर बल।
2. पुस्तकीय ज्ञान का विरोध।
3. अनुभव द्वारा सीखने पर बल।
4. स्वयं करके सीखने पर बल।
5. प्रकृति सीखने का उत्तम स्थान।
6. इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल।
7. क्रियाओं पर बल।
8. नैतिक सिद्धान्तों का अभाव।

Q.4) जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा की परिभाषा बताइए।

Ans. जॉन डीवी ने शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि मनुष्य कुछ जन्म जात शक्तियों के साथ जन्म लेता है और इन शक्तियों का विकास सामाजिक चेतना में भागीदारी के फलस्वरूप होता है। डीवी के अनुसार "समस्त शिक्षा व्यक्ति द्वारा प्रजाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से आगे बढ़ती है।"

Page No.

Date ___/___/___

जॉन डीवी का मानना है कि शिक्षा स्वयं जीवन है। जीवन के लिये शिक्षा बहुत आवश्यक है अतः शिक्षा ही जीवन है।

जॉन डीवी के अनुसार "शिक्षा, अनुभवों के सतत् पुनर्निर्माण द्वारा जीवन की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति की उन समस्त क्षमताओं का विकास है, जो उसको अपने वातावरण को नियन्त्रित करने एवं सम्भावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है।"

जॉन डीवी का यह भी मानना है कि शिक्षा से तात्पर्य अनुभव को विकसित परिवर्तित व संशोधित करना भी है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो सतत् रूप से अनुभवों का नवनिर्माण तथा पुनर्संगठन करती है।

Q.42. जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं?

Ans. जॉन डीवी एक बड़े दार्शनिक एवं प्रयोजनवादी थे जो किसी पूर्व निश्चित शिक्षा के उद्देश्य में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार शिक्षा का सदैव तात्कालिक उद्देश्य होता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली गत्यात्मक प्रक्रिया है, अतः शिक्षा के निश्चित उद्देश्यों को वह नहीं मानते। डीवी के विचारों को शिक्षा के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्न प्रकार से क्रमबद्ध किया जा सकता है—

1. वास्तविक जीवन की तैयारी—

डीवी के अनुसार

Page No.

Date __/__/__

शिक्षा का उद्देश्य वास्तविक जीवन की तैयारी है वह बालकों में ऐसे गुणों का विकास करे कि बालक अपने जीवन को सफलता पूर्वक जी सके तथा भविष्य के मार्ग पर अग्रसर हो सके।

2. अनुभवों का पुनर्निर्माण

डीवी ने स्पष्ट कर दिया कि मानव जीवन गत्यात्मक और परिवर्तन शील है। अतः शिक्षा भी गत्यात्मक एवं परिवर्तन शील है। अतः मानव जीवन में अनुभवों का निर्माण और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी निरन्तर चलती रहती है।

3. वातावरण के साथ समायोजन

शिक्षा का उद्देश्य बालक में वातावरण के साथ समायोजन की योग्यता का विकास करना है।

4. सामाजिक कुशलता का विकास

शिक्षा का उद्देश्य बालक में सामाजिक कुशलता का विकास करना है। जिससे बालक अपना जीवन यापन अच्छी तरह कर सके।

5. लोकतान्त्रिक भावना का विकास

शिक्षा का उद्देश्य बालक में लोकतान्त्रिक भावना

Page No.

Date / / 

का विकास है। जॉन डीवी लोकतांत्रिक समाज का बड़ा समर्थक था। डीवी शिक्षा के द्वारा ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ सभी व्यक्ति आपस में मिल जुल कर सहयोग से रहे। अतः वह मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में लोकतांत्रिक भावनाओं का विकास होना चाहिये।

Q.43 जॉन डीवी के अनुशासन के विषय में क्या विचार है?

Ans. जॉन डीवी सामाजिक अनुशासन के समर्थक थे। वह दंडात्मक अनुशासन के विरोधी थे। वह बालकों को किसी दण्ड के भय से सही व्यवहार करने को अनुशासन नहीं मानते थे। उनके अनुसार "अनुशासन एक भीतरी शक्ति है जो कि मनुष्य को सामाजिक मानकों के अनुसार व्यवहार करने के लिये प्रेरित करती है।" अतः उन्होंने लोकतांत्रिक वातावरण की आवश्यकता पर बल दिया। लोकतांत्रिक वातावरण के लिये स्वतंत्रता का होना आवश्यक है। लोकतांत्रिक वातावरण में बालक बिना किसी दबाव के अपनी ~~अनुरुचि~~ रुचि के अनुसार सीखता है। उनके अनुसार स्वानुशासन ही सच्चा अनुशासन है। यदि बालक स्वतंत्र वातावरण में मिलजुल कर कार्य करे तो उसमें सहयोग की भावना भी

Page No.

Date __/__/__

उत्पन्न होगी और कक्षा में सामाजिक अनुशासन भी स्थापित होगा।

## Unit V

Q. 44 बहुलवाद से आप क्या समझते हैं?

Ans. बहुलवाद से आशय उस समाज, सरकार की व्यवस्था अथवा संगठन से है जो विभिन्न समूहों को किसी एक से अधिक प्रबल समूह के साथ रहकर अपनी पहचान बनाए रखने की स्वीकृति प्रदान करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से बहुलवाद एक ऐसी धारणा है जो वृहत् समाज में लघु समूहों को अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, मूल्यों तथा परम्पराओं को बनाए रखने तथा जब तक समाज / राज्य द्वारा उन्हें स्वीकृति प्रदान करने पर बल देती है जब तक कि वे बृहत् समाज अथवा राज्य के नियमों एवं कानूनों के अनुरूप हैं।

विद्वान हेसिमों ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "बहुलवादी राज्य एक ऐसा राज्य है जिसमें सत्ता का केवल एक ही स्रोत नहीं है, यह विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित है और इसे विभाजित नहीं किया जाना चाहिये।"

Page No.

Date / /

# विविधता का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

विविधता का आशय व्यक्तियों एवं समूहों में पायी जाने वाली असमानताएँ हैं। विविधता की अवधारणा में स्वीकृति एवं सम्मान निहित होते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट एवं अनुपम होता है तथा हमें अपने वैयक्तिक भेदों को मान्यता देनी चाहिये। ये भेद प्रजाति, लिंग सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति, आयु, शारीरिक क्षमताओं, धार्मिक विश्वासों अथवा वैचारिक पहलुओं के आधार पर हो सकते हैं। इस प्रकार विविधता से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जिसमें समस्त भाषायी, क्षेत्रीय, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से अलग-अलग रहने वाले मानव एक समूह या समाज एक स्थान विशेष में साथ-साथ निवास करते हैं। ऐसे अनेक जैविक, सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक आधार हैं जो किसी भी देश के निवासियों में विविधता विकसित करते हैं। विविधता में अनेक मानवीय लक्षण जैसे प्रजाति, आयु जाति, नस्ल, राष्ट्रीय उत्पत्ति, धर्म, संजाति, लैंगिक औम विन्यास आदि सम्मिलित होते हैं।

=

Date __/__/____

Q 46 भारतीय समाज में व्याप्त विविधता का वर्णन कीजिए।

Ans भारतीय समाज में विविधता

अपनी विशेषताओं के कारण भारत को एक विविधतापूर्ण समाज कहा जाता है। भारतीय समाज अनेक प्रजातियों, जातियों, धर्म, भाषाओं और विश्वासों से मिल कर बना है। इसके अन्दर अनेक सांस्कृतिक समूह साथ-साथ रहते हैं। जलवायु की ~~दृष्टि~~ दृष्टिकोण से यह समाज अनेक भौगोलिक क्षेत्रों में बँटा हुआ है। तथा विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्यात्मक विशेषताएँ भी एक दूसरे से भिन्न हैं। भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या अनेक प्रजातियों और जातियों में बँटी हुयी है। इसी कारण भारत को जातियों और प्रजातियों का एक संगम स्थल कहा जाता है। इसी प्रकार भारत में 16,52 भाषायें बोली जाती हैं। वैसे भारतीय संविधान में केवल 18 भाषाओं का ही उल्लेख किया गया है।

भारत में अनेक धर्म हैं। भारत विभिन्न धर्मों का एक समन्वय स्थल है। भारतीय समाज के निर्माण में सभी धर्मों के व्यक्तियों का योगदान रहा है। भारत में हिन्दू, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई और पारसी धर्म को मानने वाले हैं। इन धार्मिक विभिन्नताओं के कारण अनेक बार

Page No.

Date / / 

धार्मिक संघर्ष भी हुए हैं। इन सब के बाद भी भारत में सभी धर्मों के लोग आपस में मिल जुल कर रहते हैं, किसी का विकास अवरुद्ध नहीं हुआ है। भारत में सांस्कृतिक भिन्नताएँ भी है। भारतीय समाज में परम्पराओं, खान, पान, कला, वेश-भूषा तथा नैतिकता के स्तर पर भिन्नता देखने को मिलती है। भारत में अनेक राजनीतिक दल हैं जिनकी विचारधारा में पर्याप्त अन्तर है।

इस प्रकार भारत विविधताओं का देश है यहाँ पर अनेक संस्कृतियों का मिश्रण पाया जाता है। प्रजाति, धर्म, भाषा, रीति-रिवाज आदि की दृष्टि से अनेक विविधताएँ हैं।

=

Q.47 सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans. सामाजिक स्तरीकरण एक सार्वभौमिक घटना है। कोई भी मानव समाज इससे वंचित नहीं है। सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज का विभिन्न स्तरों में विभाजन है। स्तरीकरण स्तर शब्द से बना है। परम्परागत समाजों में यह स्तरीकरण की व्यवस्था जन्म से निर्धारित होने वाली जाति व्यवस्था पर आधारित होती है। इसी प्रकार विकसित औद्योगिक समाज में इसका आधार सामाजिक वर्ग है। समाज के विभिन्न स्तर ऊँच-नीच के आधार पर

Date __/__/__

भी एक दूसरे से अलग होते हैं इन्हीं को सामाजिक स्तरीकरण कहा जाता है।

जिसबर्ट के अनुसार "समाज की उच्चता एवं अधीनता के सम्बन्धों में पारस्परिक रूप से सम्बंधित स्थायी समूहों अथवा श्रेणियों में विभाजन सामाजिक स्तरीकरण है।"

मुरे के अनुसार " सामाजिक स्तरीकरण समाज तथा निम्न सामाजिक इकाइयों में किया गया समतल विभाजन है।"

सदरलैण्ड एवं वुडवर्ड के अनुसार "स्तरीकरण केवल अन्तर्क्रिया अथवा विभेदीकरण की ही एक प्रक्रिया है, जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों की तुलना में उच्च स्थिति प्राप्त होती है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तरीकरण समाज का विभिन्न स्तरों में विभाजन है।

---

.48 सामाजिक स्तरीकरण का क्या महत्व है?

सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था वैयक्तिक दृष्टि से बहुत महत्व पूर्ण होती है, क्यों कि कार्यों और पदों का निर्धारण करके यह व्यवस्था व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्रदान करती है। उसे कार्य करने की प्रेरणा

Page No.

Date / /

तो मिलती ही है वह वैयक्तिक संघर्ष से भी बच जाता है। स्तरीकरण के फलस्वरूप उसके अधिकारों और कर्तव्यों की स्पष्ट परिभाषा हो जाती है। यह व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायक है। सामाजिक स्तरीकरण समाज में संगठन व व्यवस्था बनाये रखने में अत्यधिक सहायता प्रदान करता है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जन्म से ही भिन्न होता है। बड़े होकर समाज में रहने पर अन्य आधारों पर यह भिन्नता और भी बढ़ जाती है। व्यक्तियों के विचार-भावना, विश्वास सभी भिन्न हो जाते हैं और वे एक ऊँच-नीच के क्रम में सज जाते हैं। इससे संगठनात्मक प्रवृत्तियों को सामाजिक प्रोत्साहन प्राप्त होता है क्योंकि एक विशेष समूह में एक ही प्रकार के विश्वास, विचार आदि वाले व्यक्ति एक साथ संगठित हो जाते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख सामाजिक लाभ यह है कि इसके द्वारा व्यक्तियों को उचित सामाजिक पद प्राप्त हो जाता है। सामाजिक स्तरीकरण समाज की संघर्षों से रक्षा भी करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एक तो इससे प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति, समूह तथा स्तर को सामाजिक संतोष प्राप्त होता है, दूसरे स्तरीकरण के द्वारा ही समाज में व्यक्तियों के कार्य तथा मनोवृत्तियों का निर्धारण होता है।

Page No.

Date __/__/__

Q.49 सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुख आधार बताइए।

Ans. सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—

(1) आयु – प्रत्येक समाज में आयु के आधार पर सदस्यों में कुछ न कुछ अन्तर पाया जाता है। इन व्यक्तियों को समाज में अधिक सम्मान दिया जाता है।

(2) लिंग – लिंग के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण सभी समाजों में पाया जाता है। अधिकांशतः सभी समाजों में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों को अधिक महत्व दिया जाता है।

(3) प्रजाति – प्रजाति आधार पर ऊँच-नीच अनेक समाज में पायी जाती है। कुछ प्रजातियों को समाज में श्रेष्ठ स्थान पर रखा जाता है और कुछ प्रजातियों को समाज में निम्न स्थान दिया जाता है।

(4) जन्म – जन्म के आधार पर ऊँच-नीच की स्थिति हस्तान्तरित होती रहती है।

(5) बौद्धिक क्षमता – बौद्धिक क्षमता के आधार पर भी समाज में स्तरीकरण होता है।

Date __/__/__

6. व्यावसायिक स्थिति -

व्यावसायिक स्थिति भी स्तरीकरण का आधार है। व्यवसाय के आधार पर व्यक्तियों को समाज में उच्च और निम्न स्थिति प्राप्त होती है।

7. धार्मिक स्थिति -

प्रत्येक समाज में धर्म की महत्व पूर्ण भूमिका है। धर्म गुरुओं, धर्म प्रचारकों मठाधीशों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त है।

8. राजनीतिक स्थिति - जिस वर्ग अथवा व्यक्ति के पास राजनीतिक शक्ति अथवा सत्ता अधिक होती है। उसकी समाज में उच्च स्थिति होती है।

9. शिक्षा

शिक्षा के आधार पर भी समाज में उच्च और निम्न स्थिति पायी जाती है। शिक्षित व्यक्तियों को समाज में अधिक सम्मान प्राप्त होता है।

10 अर्जित पद - व्यक्ति अपने गुणों के आधार पर जिस पद को अर्जित करता है उसके आधार पर भी समाज में उसकी उच्च या निम्न स्थिति निर्धारित की जाती है।

Page No.

Date __/__/____

## Unit VI

Q.50 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ व परिभाषा बताइए।

Ans. समाज में होने वाला परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन कहलाता है। सामाजिक-परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है सामाजिक और परिवर्तन। सामाजिक शब्द से आशय है 'समाज' से सम्बन्धित और परिवर्तन का आशय है 'भिन्नता का होना'। इस प्रकार सामाजिक-परिवर्तन से आशय सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन या भिन्नता उत्पन्न होने से है।

**गिलिन और गिलिन** के अनुसार "सामाजिक परिवर्तन जीवन की स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तन को कहते हैं चाहे यह परिवर्तन भौगोलिक दशाओं में परिवर्तन से हुआ हो अथवा समूह के अन्दर अविष्कार से हुआ हो"

**डेविस** के अनुसार "सामाजिक संरचना और उसके कार्यों में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं"

**मैकाइवर और पेज** के अनुसार "सामाजिक संबंधों में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"

इस प्रकार- समाज में होने

वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

Q. 5) शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को किस प्रकार प्रभावित करती है।

Ans: शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है इस लिये वह समाज में होने वाले परिवर्तन को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है और बदलते हुये समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यक्ति की सहायता करती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त साधन है। शिक्षा के द्वारा ही हम समाज के लोगों के विचारों में बदलाव ला सकते हैं और समाज की उन्नति कर सकते हैं। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो किसी भी समाज को प्रगति की ओर ले जा सकती है। शिक्षा मनुष्य को चिन्तनशील प्राणी बनाती है। प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक सूचना पर गहराई के साथ विचार करने की प्रेरणा देती है। शिक्षा मनुष्य के अन्दर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करती है जिससे वे आज की वैज्ञानिक तकनीकी की ओर गतिशील होने वाले परिवर्तनों का समर्थन कर सकें।

Page No.

Date __/__/__

Q. 52 सामाजिक गतिशीलता किसे कहते हैं?

Ans. गतिशीलता का तात्पर्य है स्थान या स्थिति में परिवर्तन। जब भौगोलिक या भौतिक दृष्टि से स्थान परिवर्तन होता है तो इसे भौगोलिक गतिशीलता कहते हैं, किन्तु जब किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता है तो इसे सामाजिक गतिशीलता कहते हैं। सामाजिक गतिशीलता को निम्न प्रकार परिभाषित किया जा सकता है-

बोगार्डस के अनुसार "सामाजिक स्थिति में कोई भी परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता है।"

किंचर के अनुसार "सामाजिक गतिशीलता का अर्थ सामाजिक समूहों तथा स्तरों में किसी व्यक्ति का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में पहुँच जाना है।"

मिलर व वुक के अनुसार "सामाजिक गतिशीलता व्यक्तियों या समूहों का एक सामाजिक ढाँचे से दूसरे सामाजिक ढाँचे में संचलन है।"

इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन दर्शाती है।

Date / /

Q.53 सामाजिक गतिशीलता पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है ?

Ans. शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता में अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। वास्तव में शिक्षा व्यक्तियों के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होती है। वह अनेक प्रकार से व्यक्तियों और समाज को प्रभावित करती है। सबसे महत्व पूर्ण प्रभाव यह है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति की सामाजिक गतिशीलता बढ़ जाती है। उसका समाज में ऊँचा स्थान हो जाता है। यही कारण है कि शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का एक महत्व पूर्ण आधार माना जाता है। शिक्षा का व्यक्ति के व्यवसाय और और उसकी आय पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यह भी देखा जाता है कि बहुत पढ़े लिखे लोग उच्च श्रेणी का व्यवसाय करने में समर्थ होते हैं और उससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी सबल हो जाती है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को बहुत अधिक प्रभावित करती है। व्यापारिक तकनीकी, विद्यालय और पाठ्यक्रम व्यक्ति को समाज में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाने का अवसर प्रदान करते हैं।

—

Page No.

Date __/__/____

Unit VII

Q.54 मौलिक अधिकार - क्या है ?

Ans. भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से लिये गये हैं। मौलिक अधिकार उन अधिकारों को कहा जाता है जो व्यक्ति के लिये मौलिक होने के कारण संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किये जाते हैं और उसमें राज्य द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है। ये ऐसे अधिकार हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिये आवश्यक हैं और जिनके बिना मनुष्य अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता है। इन अधिकारों को मौलिक इस लिये कहा जाता है क्यों कि इन्हें देश के संविधान में स्थान दिया गया है तथा संविधान में संशोधन की प्रक्रिया के अतिरिक्त उसमें किसी भी प्रकार का संशोधन नहीं किया जा सकता है। मौलिक अधिकार न्याय योग्य तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्राप्त होते हैं। सामान्य कानूनी अधिकारों के विपरीत मौलिक अधिकारों को देश के संविधान द्वारा गारंटी एवं सुरक्षा प्रदान की गई है। ये असीमित नहीं हैं लेकिन वाद योग्य हैं।

Page No.

Date __/__/____

# शिक्षा का अधिकार अधिनियम क्या है?

प्रारम्भ में भारत के संविधान के अनुच्छेद 45 में शिक्षा की घोषणा की गई थी कि सभी राज्य संविधान के प्रारम्भ से 10 वर्ष की कालावधि के अन्दर सभी बालक और बालिकाओं को 14 वर्ष की आयु समाप्ति तक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगे। आगे चल कर 2002 में 86 वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान में एक नया अनुच्छेद 21 को जोड़ दिया गया जो निम्न प्रकार से है- ~~माता~~ राज्य 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु वाले सभी बालको एवं बालिकाओं के लिये नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने की एक ऐसी रीति बनाएगा जो राज्य विधि द्वारा आधारित और उपबंध हो। आगे चलकर भारत की संसद ने 4 अगस्त 2009 को बालको और बालिकाओं को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 पास किया और यह 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ। इसे ही शिक्षा का अधिकार अधिनियम कहते है। इस अधिनियम के अनुसार सभी वर्ग के 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक की नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने का मूल अधिकार होगा।

Date __/__/____

Unit VIII

Q.56 सतत् विकास की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

Ans: सतत् विकास की अवधारणा 1962 में शुरू हुई जब वैज्ञानिक रॉकल कार्सन ने 'द साइलेन्ट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में कीट नाशक डी डी टी का उपयोग करके वन्य जीवों को होने वाले नुकसान को बताया गया था। सतत् विकास को कई तरह से परिभाषित किया गया है। ब्रंट लैंड आयोग के अनुसार "सतत् विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।" सतत् विकास को उन विकासात्मक गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाते और उन्हें दीर्घकाल तक बनाए रख सकते हैं। सतत् विकास के केन्द्रीय सिद्धान्तों में से एक है प्राकृतिक संसाधनों की खपत की सीमा के भीतर रहना। सतत् विकास की अवधारणा पारम्परिक दृष्टिकोण को अस्वीकार करती है जो मानता है कि आर्थिक विकास एक आवश्यकता है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण एक विलास का साधन है। सतत् विकास में आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक समता व पर्यावरणीय गुणवत्ता को भी महत्व दिया जाता है।

Page No.

Date __/__/____

## सतत् विकास की विशेषताएँ बताइए।

सतत् विकास की निम्न विशेषताएँ हैं—

1. सतत विकास एक प्रक्रिया है जिसमें पर्यावरणीय, सामाजिक व आर्थिक संसाधनों के दोहन को इस तरह से लागू करने पर जोर दिया जाता है कि संसाधन पूर्ण रूप से नष्ट न हो तथा भविष्य में संसाधनों के पुनः उपयोग को महत्व दिया जाता है।

2. सतत् विकास का प्रयोजन वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिये औसत जीवन गुणवत्ता को बनाए रखना होता है।

3. सतत् विकास में आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक समता व पर्यावरणीय गुणवत्ता को भी बनाए रखना होता है।

4. इसमें सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय उद्देश्यों के बीच सम्बन्धों की स्थापना करने का प्रयत्न किया जाता है।

5. यह ग्रीन हाउस गैसों को कम करने, ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और पर्यावरण संसाधनों को संरक्षित करने का प्रयास करता है।

Page No. ____

Date __/__/____

Q. 58 सतत् विकास प्राप्त करने के लिये शिक्षा की क्या भूमिका है? उल्लेख कीजिए।

सतत् विकास के लिये शिक्षा को उस शिक्षा के रूप में परिभाषित किया गया है जो प्रत्येक व्यक्ति को एक सतत् भविष्य बनाने के लिये आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों को प्राप्त करने की अनुमति देता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा छात्रों को ज्ञान, कौशल और गुणों के साथ सुसज्जित करने की प्रक्रिया है जो एक प्रकार से कार्य करने और जीवन के लिये आवश्यक है और यह पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक कल्याण, दोनों वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिये सुरक्षा उपाय है। सतत् विकास के लिये शिक्षा का उद्देश्य पर्यावरण के बारे में ज्ञान का विकास करना है जिससे व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण पर अधिक ध्यान दे। सतत् विकास के लिये शिक्षा की प्राथमिकता पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

—

Page No.

Date __/__/____

# सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य बताइए।

अन्तर्राष्ट्रीय विकास, मानव विकास का एक बहु-विषयक सन्दर्भ है जो विकासशील देशों को उनकी समस्याओं के ऐसे स्थायी समाधान प्रदान करने के लिये आवश्यक क्षमता बनाने में मदद करके समस्याओं के दीर्घकालिक समाधान को लागू करने का प्रयास करता है। वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ के शिखर सम्मेलन में 2015 तक के लिये 8 वैश्विक विकास लक्ष्य निर्धारित किये गए थे। जिन्हे सहस्राब्दी विकास लक्ष्य कहा जाता है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का उद्देश्य दुनिया के सबसे गरीब देशों में सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में सुधार करके विकास को प्रोत्साहित करना था।

सहस्त्राब्दिक विकास लक्ष्य -

(1) भुखमरी तथा गरीबी को खत्म करना।
(2) सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा हासिल करना
(3) लिंग समानता तथा महिला सशक्तिकरण को प्रचारित करना।
(4) शिशु-मृत्यु दर घटाना।
(5) मातृत्व स्वास्थ्य को बढ़ावा देना।
(6) एच आई वी/एड्स, मलेरिया तथा अन्य विभिन्न प्रकार की बीमारियों से निजात पाना।
(7) पर्यावरण सतत्ता
(8) वैश्विक विकास के लिये सम्बन्ध स्थापित करना।

Page No. ____